

## नैनीताल में वनाग्नि

### चर्चा में क्यों?

उत्तराखण्ड में नैनीताल के नकिट वनों में **भीषण आग** फैल गई। संकट ने **भारतीय वायु सेना** को भीषण आग पर काबू पाने में सहायता के लिये कर्मियों और **Mi-17 हेलीकॉप्टरों** को भेजने के लिये प्रेरित किया।

वनाग्निने कथति तौर पर **108 हेक्टेयर वन को नष्ट** कर दिया है।

### मुख्य बद्दि:

- **बांबी बकेट ऑपरेशन** के नाम से जाने जाने वाले ऑपरेशन में आग बुझाने के लिये हेलीकॉप्टर जल इकट्ठा कर रहे हैं और जेट-स्प्रे का उपयोग कर रहे हैं।
- **उत्तराखण्ड के वन विभाग** के मुताबकि, **राज्य के कुमाऊँ क्षेत्र** में कुछ ही घंटों में वनाग्नि की 26 घटनाएँ हुईं।
  - जबकि **पाँच घटनाएँ गढ़वाल क्षेत्र में हुईं** जहाँ 33.34 हेक्टेयर वन क्षेत्र प्रभावित हुआ।
- भारत के पर्यावरण मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले **वन अनुसंधान संस्थान** की **वर्ष 2019** की रिपोर्ट के अनुसार **95% वनाग्नि भिनुष्यों के कारण** होती है।
- **भारत में वनाग्नि के चार समूह हैं:** उत्तर-पश्चिमी हिमालय, उत्तर-पूर्वी भारत, मध्य घाट और पश्चिमी एवं पूर्वी घाट।
  - **उत्तर-पश्चिमी हिमालय** में वनाग्नि का कारण **चीड़ के पेड़ों की बहुतायत और घने ज्वलनशील अपशषिट का जमाव** है।
  - गर्मियों के दौरान वन में भारी मात्रा में चीड़ की तीक्ष्ण-नुकीली पत्तियाँ एकत्रित हो जाती हैं, जो आग के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होती हैं और वनाग्नि का कारण बनती हैं।

### बांबी बकेट ऑपरेशन

- बांबी बकेट, जिसे हेलीकॉप्टर बकेट या हेलीबकेट भी कहा जाता है, एक विशेष कंटेनर है जिसे एक हेलिकॉप्टर के नीचे केबल द्वारा लटकाया जाता है और जिसे **आग के ऊपर प्रवाहित करने से पहले नदी या तालाब में उतारा जा सकता है तथा बकेट के नीचे एक वाल्व खोलकर हवा में छोड़ा जा सकता है।**
- बांबी बकेट विशेष रूप से वनाग्नि से बचने या उसका सामना करने में सहायक है, जहाँ ज़मीन से पहुँचना मुश्किल या असंभव है। विश्व भर में वनाग्नि का सामना करने के लिये अक्सर हेलीकॉप्टरों का प्रयोग किया जाता है।

### वनाग्नि

- **इसे बुश फायर/वेजिटेशन फायर या वनाग्नि** भी कहा जाता है, इसे कसि भी अनयितरति और गैर-नरिधारति दहन या प्राकृतिक स्थिति जैसे कि जंगल, घास के मैदान, कषुपभूमि (Shrubland) अथवा टुंडरा में पौधों/वनस्पतियों के जलने के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जो प्राकृतिक ईंधन का उपयोग करती है तथा पर्यावरणीय स्थितियों (जैसे- हवा तथा स्थलाकृति आदि) के आधार पर इसका प्रसार होता है।
- वनाग्नि के लिये **तीन कारकों की उपस्थिति** आवश्यक है और वे हैं- **ईंधन, ऑक्सीजन एवं गर्मी अथवा ताप का स्रोत।**
- **वर्गीकरण:**
  - **सतही आग:** वनाग्नि अथवा दावानल की शुरुआत सतही आग (Surface Fire) के रूप में होती है जिसमें वन भूमि पर पड़ी सूखी पत्तियाँ, छोटी-छोटी झाड़ियाँ और लकड़ियाँ जल जाती हैं तथा धीरे-धीरे इनकी लपटें फैलने लगती हैं।
  - **भूमिगत आग:** कम तीव्रता की आग, जो भूमि की सतह के नीचे मौजूद कार्बनिक पदार्थों और वन भूमि की सतह पर मौजूद अपशषिटों का उपयोग करती है, को भूमिगत आग के रूप में उप-वर्गीकृत किया जाता है। अधिकांश घने जंगलों में **खनजि मृदा के ऊपर कार्बनिक पदार्थों का एक मोटा आवरण पाया जाता है।**
    - इस प्रकार की आग **आमतौर पर पूरी तरह से भूमिगत रूप में फैलती** है और यह सतह से कुछ मीटर नीचे तक जलती है।
    - यह **आग बहुत धीमी गति से फैलती** है और अधिकांश मामलों में इस तरह की आग का पता लगाना तथा उस पर काबू पाना बहुत मुश्किल हो जाता है।
    - ये कई **महीनों तक जलते रह सकते हैं** और मृदा से वनस्पतिक के आवरण को नष्ट कर सकते हैं।
  - **कैनोपी या क्राउन फायर:** ये तब होता है जब वनाग्नि **पेड़ों की ऊपरी आवरण/वितान के माध्यम से फैलती है**, जो प्रायः तेज़ हवाओं और

शुष्क परस्थितियों के कारण भड़कती है। ये वशिष रूप से तीव्र और नयित्त्रति करने में कठनि हो सकती हैं।

- **कंटरोल्ड डेलीबरेट फायर:** कुछ मामलों में, कंटरोल्ड डेलीबरेट फायर, जसिे नरिधारति वनाग्ना या झाड़ियों की आगजनी के रूप में भी जाना जाता है, इच्छति तौर पर या जानबूझकर वन प्रबंधन एजेंसियों द्वारा ईधन भार को कम करने, अनयित्त्रत्तिनाग्ना के जोखमि को कम करने और पारस्थितिकि तंत्र के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लयि लगाई जाती है।
- जोखमिों को कम करने और वन पारस्थितिकि तंत्र को अधिकतम लाभ पहुँचाने के लयि इन नयित्त्रति अग्ना की सावधानीपूर्वक योजना बनाई जाती है तथा वशिषिट परस्थितियों में नषिपादति कयिा जाता है

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/nainital-forest-fire>

